1. आर्थिक कारक:

- भारी कराधान और विशाल साम्राज्य को बनाए रखने की लागत ने अर्थव्यवस्था को तनावपूर्ण बना दिया।
- निरंतर युद्ध और सैन्य अभियान, विशेषकर अशोक के पूर्ववर्तियों के अधीन, आर्थिक रूप से बोझिल थे।
- कृषि से प्राप्त राजस्व पर साम्राज्य की अत्यधिक निर्भरता के कारण आर्थिक स्थिरता आई।

2. प्रशासनिक मुद्दे:

- मौर्य साम्राज्य के बड़े आकार के कारण केंद्रीकृत प्रशासन को बनाए रखना चुनौतीपूर्ण हो गया था।
- नौकरशाही में भ्रष्टाचार और अक्षमता घर कर गई, जिससे शासन की प्रभावशीलता कम हो गई।
- प्रांतीय गवर्नरों को अधिक स्वायत्तता मिलने से साम्राज्य बोझिल हो गया।

3. उत्तराधिकार की समस्याएँ:

- अशोक की मृत्यु के बाद, मौर्य साम्राज्य को कई कमजोर और अप्रभावी शासकों का सामना करना पड़ा।
- उत्तराधिकार विवादों और सम्राटों की हत्याओं ने साम्राज्य की स्थिरता को और कमजोर कर दिया।
- अशोक के बाद के शासकों में उसके नैतिक और प्रशासनिक गुणों का अभाव था।

4. बाहरी खतरे:

- बाहरी आक्रमणों ने, विशेष रूप से उत्तर-पश्चिम से ग्रीक और बैक्ट्रियन राजाओं द्वारा, एक महत्वपूर्ण चुनौती पेश की।
- भारत के उत्तर-पश्चिमी प्रांतों पर फिर से नियंत्रण पाने के सेल्यूसिड साम्राज्य के प्रयासों ने साम्राज्य की मुसीबतें बढ़ा दीं।

5. विद्रोह और असहमति:

- साम्राज्य के भीतर प्रांतों और क्षेत्रों में दमनकारी कराधान और प्रशासनिक मुद्दों के कारण स्थानीय विद्रोह और विद्रोह हुए।
- उदाहरण के लिए, कलिंग क्षेत्र ने क्रूर कलिंग युद्ध के बाद अशोक के शासन के खिलाफ विद्रोह कर दिया।

6. धार्मिक एवं वैचारिक परिवर्तन:

- अशोक के शासनकाल के बाद राजधर्म के रूप में बौद्ध धर्म का प्रचार कम हो गया।
- बाद के शासकों ने बौद्ध सिद्धांतों और मूल्यों के प्रति समान स्तर की प्रतिबद्धता बनाए नहीं रखी।

7. व्यापार और वाणिज्य का पतन:

- भूमध्य सागर जैसे अन्य क्षेत्रों के साथ व्यापार संबंधों में गिरावट ने आर्थिक स्थिरता में योगदान दिया।
- सिल्क रोड व्यापार मार्ग ने मौर्य क्षेत्र के अधिकांश हिस्से को बायपास कर दिया, जिससे व्यापार प्रभावित हुआ।

8. विखंडन और क्षेत्रीय साम्राज्य:

- जैसे-जैसे केंद्रीय सत्ता कमजोर हुई, मौर्य साम्राज्य छोटे-छोटे क्षेत्रीय राज्यों में विभाजित हो गया।
- इन क्षेत्रीय शासकों ने अपनी स्वतंत्रता का दावा किया और अपने राजवंशों की स्थापना की।

9. विदेशी आक्रमण और अंत:

- मौर्य साम्राज्य को अंतिम झटका 185 ईसा पूर्व के आसपास पुष्यमित्र शुंग के नेतृत्व में शुंग वंश के आक्रमण से लगा।
- पुष्यमित्र शुंग ने सिंहासन पर कब्ज़ा कर लिया और शुंग राजवंश की स्थापना की, जो आधिकारिक तौर पर मौर्य साम्राज्य के अंत का प्रतीक था।